सूरह — एक कहानी

सूरह अल-हुजुरात

हुजरे

पूरा सफ़र — एक मोमिन मुआशरे के आदाब —

जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 49 • 18 आयतें • मदनी

नूरानी इल्म

nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

या अय्युहल्-लज़ीन आमनू ला तुक़द्दिमू बैन यदयिल्-लाहि व रसूलिह
1. ऐ ईमान वालो! अल्लाह और उसके रसूल से आगे मत बढ़ो।

इन जा-अकुम फ़ासिकुम्-बि-नबइन फ़-तबय्यनू
6. अगर कोई फ़ासिक़ तुम्हारे पास कोई ख़बर लाए तो तहक़ीक़ कर लो।

इन्नमल्-मु'मिनून इख़्वतुन फ़-अस्लिहू बैन अख़वैकुम
10. मोमिन तो आपस में भाई हैं, तो अपने दो भाइयों के दरमियान सुलह कराओ।

अ युहिब्बु अहदुकुम अंय्-य'कुल लह्म अख़ीहि मैतन फ़-करिह्तुमूह
12. क्या तुम में से कोई पसंद करेगा कि अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाए? तुम तो इसे मकरूह समझोगे।

इन्ना ख़लक़्नाकुम मिन ज़करिंव्-व उन्सा व ज'अल्नाकुम शु'ऊबंव्-व क़बा-इल लि-त'आरफ़ू
13. हमने तुम्हें एक मर्द और एक औरत से बनाया, और तुम्हें क़ौमें और क़बीले बनाया ताकि तुम एक दूसरे को पहचानो।

इन्न अक्रमकुम 'इंदल्-लाहि अत्क़ाकुम
13. बेशक तुम में अल्लाह के नज़दीक सब से बा-इज़्ज़त वो है जो सब से ज़्यादा मुत्तक़ी है।

आदाब की सूरह

बेटा, इस सूरह का एक ख़ास मक़ाम है: उलमा इसे **'सूरह अल-अख़लाक़'** — आदाब की सूरह — कहते हैं, क्योंकि अठारह आयतों में ये एक मोमिन मुआशरे के मुकम्मल आदाब रख देती है।

और एक क़ाबिल-ए-ज़िक्र बात ग़ौर कीजिए, बेटा: ये ज़्यादातर उन लोगों को मुख़ातिब है जो **पहले ही ईमान रखते हैं।** पाँच बार ये यूँ शुरू होती है: '**या अय्युहल्-लज़ीन आमनू**' — ऐ ईमान वालो। ये काफ़िरों को हिदायात नहीं कि मुसलमान कैसे बनें। **ये मुसलमानों को हिदायात हैं कि एक दूसरे के साथ कैसे पेश आएँ।**

क्योंकि एक शख़्स नमाज़ पढ़ सकता, रोज़ा रख सकता, और दे सकता है — **और फिर भी लोगों के साथ अपने मुआमलात में एक आफ़त हो सकता है।** और अल्लाह ने इसे इत्तिफ़ाक़ पर नहीं छोड़ा।

'या अय्युहल्-लज़ीन आमनू **ला तुक़द्दिमू बैन यदयिल्लाहि व रसूलिह** — ऐ ईमान वालो! अल्लाह और उसके रसूल से **आगे मत बढ़ो** — वत्तक़ुल्लाह — और अल्लाह से **डरो**।'

बेटा, ये पहली आयत हर चीज़ की बुनियाद रखती है। **अल्लाह के फ़ैसले से अपनी राय ले कर आगे मत दौड़ो।** पहले तय मत करो कि क्या सही है और फिर उसकी ताईद के लिए आयत ढूँढो। किसी ऐसे मामले पर *'मेरी नज़र में ये जायज़ होना चाहिए'* मत कहो जिसे अल्लाह पहले ही तय कर चुके।

अबू बक्र और उमर (रज़ि0) एक बार नबी ﷺ के सामने एक क़बीले पर सरदार मुक़र्रर करने पर इख़्तिलाफ़ कर बैठे, और इख़्तिलाफ़ में उनकी आवाज़ें ऊँची हो गईं — और ये हिस्सा नाज़िल हुआ। बेटा, उसके बाद, **अबू बक्र नबी ﷺ से तक़रीबन सरगोशी में बात करते**, और उमर की आवाज़ इतनी धीमी हो गई कि नबी ﷺ को कभी उन्हें दोहराने को कहना पड़ता।

'या अय्युहल्-लज़ीन आमनू **ला तर्फ़'ऊ अस्वातकुम फ़ौक़ सौतिन्-नबिय्य** — अपनी **आवाज़ें** नबी की आवाज़ से **ऊँची** मत करो — व ला तज्हरू लहू बिल्-क़ौलि क-जहि ब'अ्ज़िकुम लि-ब'अ्ज़ — और उस से यूँ ज़ोर से बात मत करो जैसे तुम एक दूसरे से ज़ोर से करते हो — **अन तह्बत अ'मालुकुम व अन्तुम ला तश्'उरून** — कहीं तुम्हारे **अमल ज़ाया** न हो जाएँ और **तुम्हें ख़बर तक न हो।**'

बेटा, उस तंबीह का वज़न महसूस कीजिए: **अमल एक ऊँची आवाज़ से तबाह, और शख़्स को ये होते हुए पता तक न चले।** अदब दीन के ऊपर कोई सजावट नहीं; **ये उसकी बनावट का हिस्सा है।**

और उन के लिए अज्र जो अपनी आवाज़ें धीमी करते हैं: 'उलाइकल्-लज़ीनम्-तहनल्लाहु क़ुलूबहुम लित्-तक़्वा — यही वो लोग हैं जिनके **दिलों** को अल्लाह

ने **तक़्वा के लिए जाँचा और पाक** किया — लहुम मग़्फ़िरतुंव्-व अज्रुन 'अज़ीम।'

बेटा, **एक धीमी आवाज़ को एक पाक दिल के सबूत के तौर पर क़ुबूल किया गया। ** सोचिए ये हमारे अपने झगड़ों के बारे में क्या कहता है — घरों में, कमेंट सेक्शन में, ख़ानदानी महफ़िलों में।

यक़ीन करने से पहले तहक़ीक़ करो

'या अय्युहल्-लज़ीन आमनू **इन जा-अकुम फ़ासिक़ुम्-बि-नबइन फ़-तबय्यनू** — ऐ ईमान वालो! अगर कोई **फ़ासिक़** तुम्हारे पास कोई **ख़बर** लाए, तो **तहक़ीक़ कर लो** — **अन तुसीबू क़ौमम्-बि-जहालतिन** — कहीं तुम किसी क़ौम को **जहालत** में **नुक़सान** न पहुँचाओ — **फ़-तुस्बिहू 'अला मा फ़-'अल्तुम नादिमीन** — और फिर जो तुमने किया उस पर **पछताओ।**'

बेटा, इस आयत का पस-मंज़र सबक़-आमोज़ है। एक आदमी को एक क़बीले से ज़कात वुसूल करने भेजा गया; उन के दरमियान पुरानी दुश्मनी थी। उसने उन्हें अपनी तरफ़ आते देखा, घबरा गया, और ये ख़बर ले कर वापस आया कि उन्होंने देने से इनकार किया और उसे क़त्ल करने का इरादा रखते थे। **एक लश्कर तक़रीबन रवाना कर दिया गया** — और फिर उस क़बीले का वफ़्द आया, ये कहते हुए कि वो तो वुसूल करने वाले का **इस्तक़बाल** करने निकले थे। और ये आयत नाज़िल हुई।

बेटा, देखिए कितना कुछ दाँव पर था: **एक पूरा मुआशरा एक अन-तहक़ीक़-शुदा ख़बर पर लम्हों दूर था हमला होने से।**

अब अपने दौर के बारे में सोचिए। फ़ोन पर एक मैसेज आता है। ये चौंका देने वाला है, ये उस चीज़ की तस्दीक़ करता है जिसका हम किसी के बारे में पहले ही शुबहा करते हैं, और इसे फ़ॉरवर्ड करना आसान है। **और दो सेकंड में, एक भी हक़ीक़त चेक किए बग़ैर, एक शख़्स एक साख़ तबाह कर सकता है, एक शादी तोड़ सकता है, या एक ऐसी अफ़वाह शुरू कर सकता है जो उस से ज़्यादा ज़िंदा रहे।**

'**फ़-तबय्यनू**' — तहक़ीक़ करो। बेटा, ये अकेली आयत हमारे मुआशरों की ज़्यादातर ख़राबी साफ़ कर देती। किसी शख़्स के बारे में एक दावा मानने से पहले, पूछो: **मुझे किसने बताया? क्या उन की कोई रंजिश है? क्या मैंने दूसरा पहलू सुना? क्या मैं ये उस शख़्स के सामने कहूँगा जिसका ताल्लुक़ है?**

और दो नताइज ग़ौर कीजिए जिनका अल्लाह नाम लेते हैं: लोगों को '**बि-जहालह**' — जहालत में — नुक़सान पहुँचाना और फिर '**नादिमीन**' — पछतावा। बेटा, वो पछतावा सब से बुरा हिस्सा है, क्योंकि **तब तक अल्फ़ाज़ सफ़र कर चुके होते हैं और वापस नहीं बुलाए जा सकते।**

अपने भाइयों के दरमियान सुलह कराओ

फिर सूरह झगड़े को मुख़ातिब करती है — और ये हैरत-अंगेज़ तौर पर अमली है: '**व इन ताइफ़तानि मिनल्-मु'मिनीनक़्-ततलू फ़-अस्लिहू बैनहुमा** — और अगर **मोमिनीन** के दो गिरोह लड़ पड़ें, तो उन के दरमियान **सुलह** कराओ।'

बेटा, ग़ौर कीजिए: **लड़ाई के दौरान भी, अल्लाह उन्हें फिर भी मोमिन कहते हैं।** वो उन्हें एक झगड़े पर ईमान से नहीं निकालते। और मुआशरे का फ़र्ज़ **तरफ़-दारी करना या तमाशा देखना नहीं — ये मिलाना है।**

और अगर एक फ़रीक़ इनकार करे और दूसरे पर ज़ुल्म करे, तो मुआशरे को मज़लूम के साथ खड़ा होना चाहिए जब तक वो अल्लाह के हुक्म की तरफ़ न लौट आए — 'फिर उन के दरमियान **इंसाफ़** के साथ सुलह कराओ, और इंसाफ़ करो। बेशक, अल्लाह इंसाफ़ करने वालों से मोहब्बत करता है।'

बेटा, ग़ौर कीजिए: **जब तुम एक ज़ालिम को रोक भी रहे हो, हुक्म 'बिल-'अद्ल' है — इंसाफ़ के साथ। ग़लत से लड़ना ग़लत का जवाज़ नहीं।**

और फिर वो आयत जो पूरी उम्मत का दस्तूर है: '**इन्नमल्-मु'मिनून इख़्वतुन फ़-अस्लिहू बैन अख़वैकुम** — **मोमिन तो आपस में भाई हैं**, तो अपने **दो भाइयों** के दरमियान सुलह कराओ।'

बेटा, अल्फ़ाज़ देखिए — 'तुम्हारे दो **भाइयों**'। यानी जब दो मोमिन लड़ रहे हों, आप किसी 'फ़रीक़' के दरमियान सुलह नहीं करा रहे — **आप अपने दो भाइयों को मिला रहे हैं।** और नबी ﷺ ने फ़रमाया: क्या मैं तुम्हें उस चीज़ की ख़बर न दूँ जो रोज़े, नमाज़ और सदक़े के दर्जे से **बढ़ कर** है? लोगों के दरमियान **सुलह कराना।**

एक मुआशरे की छह बीमारियाँ

और अब, बेटा, दो आयतें आती हैं जो **छह समाजी बीमारियों** का नाम लेती हैं — और अगर एक मुआशरा सिर्फ़ इन्हीं छह से बचे, तो वो एक बाग़ होता।

'**ला यस्ख़र क़ौमुम्-मिन क़ौमिन 'असा अंय्-यकूनू ख़ैरम्-मिन्हुम** — कोई क़ौम दूसरी क़ौम का **मज़ाक़** न उड़ाए; **शायद वो उन से बेहतर हों** — व ला निसा-उम्-मिन निसा-इन 'असा अंय्-यकुन्न ख़ैरम्-मिन्हुन्न — न औरतें दूसरी औरतों का; शायद वो उन से बेहतर हों।'

बेटा, वो जुमला — '**'असा अंय्-यकूनू ख़ैरम्-मिन्हुम**', शायद वो बेहतर हों — **हर मज़ाक़ उड़ाने वाली ज़ुबान को रोक देना चाहिए।** तुम किसी पर हँस रहे हो जिसका अल्लाह के हाँ दर्जा तुम से कहीं ऊपर हो सकता है। वो आदमी पुराने कपड़ों में रात को नमाज़ पढ़ता हो जब तुम सोते हो।

'**व ला तल्मिज़ू अन्फ़ुसकुम** — और एक दूसरे को **ताने** मत दो।' बेटा, अल्फ़ाज़ देखिए: लफ़्ज़ी तौर पर '**अपने आप को** ताने मत दो'। क्योंकि उम्मत **एक जिस्म** है — किसी दूसरे मोमिन को ताना देना ऐसे है जैसे हाथ चेहरे पर मार दे।

'**व ला तनाबज़ू बिल्-अल्क़ाब** — और एक दूसरे को बुरे **लक़बों** से मत पुकारो।' बेटा, ज़ाहिरन एक छोटी बात। और अल्लाह ने इस के ख़िलाफ़ क़ानून बनाया — क्योंकि **एक नाम जो किसी के जिस्म, ख़ानदान, रंग या माज़ी का मज़ाक़ उड़ाए उम्र-भर ज़ख़्मी कर सकता है।** किसी भी बालिग़ से उसके स्कूल के दिए लक़ब के बारे में पूछो।

फिर अगली आयत **तीन और** का नाम लेती है: '**इज्तनिबू कसीरम्-मिनज़्-ज़न्न** — बहुत **गुमान** से **बचो** — **इन्न ब'अ्ज़ज़्-ज़न्नि इस्म** — बेशक, कुछ गुमान **गुनाह** है।'

बेटा, 'ज़न्न' — बद-गुमानी, बुरा सोचना। *उसने मेरे मैसेज का जवाब नहीं दिया, तो वो ज़रूर मग़रूर होगा। वो महफ़िल में नहीं थी, तो वो ज़रूर जलती होगी।* अल्लाह कहते हैं: **इसकी बहुत सी चीज़ से बचो**, क्योंकि कुछ तो सराहत गुनाह है। और नबी ﷺ ने फ़रमाया: **बद-गुमानी से बचो, क्योंकि बद-गुमानी सब से झूटी बात है।**

'**व ला तजस्ससू** — और **जासूसी** मत करो।' बेटा, लोगों के ज़ाती मुआमलात की तहक़ीक़ मत करो, जो तुम्हारा पढ़ना नहीं उसे मत पढ़ो, **उन ऐबों को ढूँढने मत जाओ जो अल्लाह ने ढाँप दिए।**

'**व ला यग़्तब ब'अ्ज़ुकुम ब'अ्ज़ा** — और एक दूसरे की **ग़ीबत** मत करो।'

और फिर अल्लाह इस मौज़ू पर पूरे क़ुरआन की सब से ना-क़ाबिल-ए-फ़रामोश तस्वीर देते हैं: '**अ युहिब्बु अहदुकुम अंय्-य'कुल लह्म अख़ीहि मैतन फ़-करिह्तुमूह** — **क्या तुम में से कोई पसंद करेगा कि अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाए? तुम तो इसे मकरूह समझोगे।**'

बेटा, उस की ताक़त महसूस कीजिए। अल्लाह ने ये नहीं कहा कि ग़ीबत 'बुरी' या 'ना-ज़ेबा' है। **उन्होंने इसे आदम-ख़ोरी से तशबीह दी** — और सिर्फ़ एक आदमी खाना नहीं, बल्कि अपने **भाई** को खाना, और उसे **मुर्दा** खाना, **जब वो अपना दिफ़ा नहीं कर सकता।**

यही ठीक ग़ीबत है: शख़्स ग़ैर-हाज़िर है, जवाब देने से क़ासिर, और तुम उसे दूसरों की तफ़रीह के लिए खा रहे हो।

'वत्तक़ुल्लाह — और अल्लाह से डरो — **इन्नल्लाह तव्वाबुर्-रहीम** — बेशक, अल्लाह तौबा क़ुबूल करने वाला, रहीम है।' बेटा, इतनी सख़्त आयत के आख़िर में रहमत ग़ौर कीजिए: **तौबा का दरवाज़ा फ़ौरन खोल दिया गया।**

तुम में सब से बा-इज़्ज़त

और अब, बेटा, हम इंसानी बराबरी पर कभी नाज़िल हुई सब से अज़ीम आयतों में से एक तक पहुँचते हैं — एक आयत जो नबी ﷺ ने अपनी ज़िंदगी के सब से बड़े इज्तिमा से पहले अपने **ख़ुत्बा-ए-हज्जतुल-विदा** में पढ़ी:

'**या अय्युहन्-नासु** — **ऐ इंसानो!**' बेटा, ख़िताब की तब्दीली ग़ौर कीजिए। पूरी सूरह 'ऐ ईमान वालो' कह रही थी। **यहाँ अल्लाह तमाम लोगों से बात करते हैं** — मोमिन और काफ़िर, हर नस्ल, हर सदी।

'**इन्ना ख़लक़्नाकुम मिन ज़करिंव्-व उन्सा** — बेशक, हमने तुम्हें एक **मर्द** और एक **औरत** से बनाया — **व ज'अल्नाकुम शु'ऊबंव्-व क़बा-इल लि-त'आरफ़ू** — और तुम्हें **क़ौमें** और **क़बीले** बनाया **ताकि तुम एक दूसरे को पहचानो।**'

बेटा, तमाम इंसानी तनव्वो के लिए दिया गया मक़सद देखिए: '**लि-त'आरफ़ू**' — **ताकि तुम एक दूसरे को पहचानो।** मुक़ाबला करने को नहीं, दर्जा देने को नहीं, ग़लबा करने को नहीं। **क़ौमें, ज़ुबानें, रंग और क़बीले एक पहचान और शनाख़्त के निज़ाम के तौर पर मौजूद हैं** — जैसे एक नाम का टैग मदद करता है, उस से ज़्यादा कुछ नहीं।

और हर इंसान **एक मर्द और एक औरत** तक वापस जाता है — तो **नस्ली बरतरी का हर दावा ख़ुद आपके अपने नसब के ख़िलाफ़ एक दावा है।**

'**इन्न अक्रमकुम 'इंदल्लाहि अत्क़ाकुम** — **बेशक, तुम में अल्लाह के नज़दीक सब से बा-इज़्ज़त वो है जो सब से ज़्यादा मुत्तक़ी है।**'

बेटा, इस एक जुमले ने **हर वो दर्जाबंदी ख़त्म कर दी जो इंसानियत ने कभी ईजाद की।** सब से दौलत-मंद नहीं। सब से गोरा नहीं। सब से तालीम-याफ़्ता नहीं। उस शरीफ़ क़बीले या सही ख़ानदान या सही मुल्क वाला नहीं। **सब से ज़्यादा ख़ौफ़-ए-ख़ुदा वाला।**

और नबी ﷺ ने, 'अरफ़ात के अपने **ख़ुत्बा-ए-अलविदा** में, एलान किया: *ऐ लोगो, तुम्हारा रब एक है और तुम्हारा बाप एक है। किसी अरब की किसी अजमी पर कोई बरतरी नहीं, न किसी अजमी की अरब पर; न किसी गोरे की काले पर, न काले की गोरे पर — सिवाए तक़्वा के।*

बेटा, और नापने की छड़ी के तौर पर तक़्वा का हुस्न ये है कि **ये ना-दिखता है।** तुम देख नहीं सकते किस के पास ज़्यादा है। **जिसका मतलब कोई इंसान कभी इस मक़ाम पर नहीं कि दूसरे को दर्जा दे।** तराज़ू मौजूद है, मगर **सिर्फ़ अल्लाह उसे पढ़ते हैं** — और ठीक इसी लिए आयत ख़त्म होती है: 'इन्नल्लाह 'अलीमुन ख़बीर।'

ईमान अभी तुम्हारे दिलों में नहीं आया

और सूरह ख़त्म होती है, बेटा, ख़ुद ईमान के बारे में **आजिज़ी** के एक सबक़ के साथ।

'**क़ालतिल्-अ'राबु आमन्ना** — **बद्दुओं** ने कहा: **हम ईमान ले आए।** **क़ुल लम तु'मिनू व लाकिन क़ूलू अस्लम्ना** — कहो: तुम (अभी) **ईमान** नहीं लाए; बल्कि कहो: हमने **इस्लाम क़ुबूल** किया — **व लम्मा यद्ख़ुलिल्-ईमानु फ़ी क़ुलूबिकुम** — क्योंकि **ईमान अभी तुम्हारे दिलों में दाख़िल नहीं हुआ।**'

बेटा, ये एक ठीक और नरम फ़र्क़ है। **इस्लाम** ज़ाहिरी फ़रमाँबरदारी है — शहादा, नमाज़, जमाअत से ताल्लुक़। **ईमान** वो अंदरूनी हक़ीक़त है जो दिल में जम जाती है। **हर मोमिन मुसलमान है, मगर हर वो शख़्स जो इस्लाम में दाख़िल हुआ उसके दिल में अभी ईमान दाख़िल नहीं हुआ।**

और अल्फ़ाज़ में रहमत ग़ौर कीजिए: '**लम्मा**' — **अभी नहीं।** अल्लाह उन्हें रद्द नहीं करते; वो उन्हें बताते हैं कि **सफ़र मुकम्मल नहीं हुआ।** 'व इन तुती'ऊल्लाह व रसूलहू ला यलित्कुम मिन अ'मालिकुम शै-आ — और अगर तुम अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करो, तो वो तुम्हारे अमल में से कुछ **कम नहीं** करेगा।'

और फिर सच्चे मोमिन की तारीफ़: '**इन्नमल्-मु'मिनूनल्-लज़ीन आमनू बिल्लाहि

व रसूलिही सुम्म लम यर्तबू** — मोमिन तो वो हैं जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाए **फिर शक न किया** — **व जाहदू बि-अम्वालिहिम व अन्फ़ुसिहिम फ़ी सबीलिल्लाह** — और अपने **मालों** और अपनी **जानों** से अल्लाह की राह में जद्दो-जहद की। **उलाइक हुमुस्-सादिक़ून** — **यही सच्चे हैं।**'

बेटा, तीन चीज़ें: ईमान, फिर **शक न करना**, फिर **माल और जान से कोशिश।** ज़ुबान का दावा नहीं — **अमल की गवाही।**

और आख़िरी आयत, जो पूरी सूरह पर मुहर लगा देती है: '**यमुन्नून 'अलैक अन अस्लमू** — वो तुम पर **एहसान जताते** हैं कि उन्होंने इस्लाम क़ुबूल किया। **क़ुल ला तमुन्नू 'अलय्य इस्लामकुम** — कहो: मुझ पर अपने इस्लाम का एहसान मत जताओ — **बलिल्लाहु यमुन्नु 'अलैकुम अन हदाकुम लिल्-ईमान** — बल्कि **अल्लाह तुम पर एहसान करते हैं कि उसने तुम्हें ईमान की हिदायत दी** — अगर तुम सच्चे हो।'

बेटा, इस पर ठहरिए। कोई शख़्स ये सोच सकता है कि उसने दीन क़ुबूल कर के अल्लाह पर एहसान किया। **और अल्लाह तराज़ू पलट देते हैं: हिदायत ख़ुद एक अता है, कोई अदा किया हुआ क़र्ज़ नहीं।**

तो जब भी आपको अपनी नमाज़, अपने रोज़े, अपने दीन-दारी पर फ़ख़्र महसूस हो — **याद रखिए कि वो क़ाबिलियत भी उसी की दी हुई थी।** अल्हम्दुलिल्लाह कहिए, और आगे बढ़ जाइए।

इस सूरह से क्या सीखा

1. अल्लाह के फ़ैसले से आगे मत बढ़िए — पहले राय बना कर फिर उसकी ताईद में आयत मत ढूँढिए।

2. अदब दीन की सजावट नहीं, बनावट है: एक ऊँची आवाज़ अमल ज़ाया कर सकती है, और ख़बर तक न हो।

3. 'फ़-तबय्यनू' — फ़ॉरवर्ड करने से पहले तहक़ीक़ कीजिए; अल्फ़ाज़ सफ़र कर जाएँ

तो वापस नहीं बुलाए जा सकते।

4. लड़ाई में भी वो 'मोमिन' रहते हैं — तरफ़-दारी मत कीजिए, मिलाइए; और ज़ालिम को रोकते हुए भी इंसाफ़ मत छोड़िए।

5. छह बीमारियों से बचिए: मज़ाक़, ताने, बुरे लक़ब, बद-गुमानी, जासूसी, ग़ीबत — और ग़ीबत को अल्लाह ने आदम-ख़ोरी कहा।

6. तनव्वो का मक़सद 'लि-त'आरफ़ू' है — पहचानने के लिए, दर्जा देने के लिए नहीं; और इज़्ज़त का वाहिद पैमाना तक़्वा है, जो ना-दिखता है।

7. हिदायत ख़ुद एक अता है, कोई एहसान नहीं जो आपने अल्लाह पर किया हो।

या अल्लाह, हमारी ज़ुबानों को अपने भाइयों से महफ़ूज़ रखिए, हमारे दिलों को बद-गुमानी से पाक कीजिए, और हमें उन में बनाइए जिनका ईमान दिलों में दाख़िल हो चुका। आमीन।